INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 5.828 (SJIF 2022)

समकालीन नाटककार : डॉ. सुरेश शुक्ल 'चन्द्र'

(Contemporary Dramatist: Dr. Suresh Shukla 'Chandra')

प्रा.मनिषा रामचंद्र गाडीलकर
सहाय्यक प्राध्यापक,
हिंदी विभाग,
श्री मुलिकादेवी महाविद्यालय, निघोज,
ता.पारनेर, जि.अहमदनगर

DOI No. 03.2021-11278686 **DOI Link ::** https://doi-ds.org/doilink/07.2022-91499824/IRJHIS2207006

प्रस्तावना :

साठोत्तरी हिंदी नाटक के महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर डॉ.सुरेश शुक्ल 'चन्द्र' एक श्रेष्ठ समकालीन नाटककार के रुप में भी जाने जाते है। डॉ. चन्द्र आधुनिक भावबोध, राष्ट्रीय चेतना और मूल्यधर्मी नैतिकता के सशिष्ट नाटककार थे। निजी जीवन में शुचिता, यश, निरपेक्षता और निष्काम भाव से साहित्य साधना उनके व्यक्तित्व को पहचान रही है। जीवन और साहित्य के अटुट सबंध की श्रृंखला मनुष्य के जीवन में अनेक रास्तों से होते हुए किसी पड़ाव पर पहुँचती है। जीवन और साहित्य का संबंध अभिन्न है, कोई भी साहित्यकार कितना ही तटस्थ क्यों न हो फिर भी साहित्य में उसके जीवन के कुछ-ना-कुछ अंश आ ही जाते हैं। साहित्यकार का व्यक्तित्व तो उसके साहित्य में निहित रहता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय समाज में अनेक पारंपारिक मूल्य विघटित हुए हैं, नए मूल्यों की स्थापना हुई है। वैज्ञानिक और बौध्दिक प्रगती के परिणामस्वरुप समाज की सोच की दिशा में आमुल परिवर्तन दिखाई देता है। युग के बदलाव की इस परिवर्तित दृष्टि का प्रभाव हमारे साहित्य पर भी पडा है। "साहित्य वही प्रासंगिक और उपादेय माना जाता है, जो अपने युग की भली-भाँति निर्मित होता है।"[१]

- **समकालीन शब्द की व्याख्या :-**

हिंदी में 'समसामायिकता' शब्द की व्याकरणिक संरचना इस प्रकार है - सम + समय + इक + ता। इसका अभिप्राय है - समय के साथ। यह अंग्रजी शब्द 'कांटेम्पेरेरी' शब्द के आधार पर बने 'समसामायिक' पद के साथ 'ता' प्रत्यय लगाकर भाववाचक पद बनाया गया है। 'कान्टेम्पोरेरी' शब्द का अर्थ है, "One that lives at the same time with another"[२] कान्टेपेरेरी का अर्थ हिंदी रुपांतर 'समकालीन' है जिसका अर्थ है जो एक ही समय में हुआ हो। समसामायिकता की व्याकरणिक संरचना के अनुसार समय का अर्थ है –'काल' तथा सम से अभिप्राय 'समान' है। अत: समकालीन और

समसामायिक का अर्थ एक ही है अर्थात समसामायिक का अर्थ है वे दो तत्व जो एक ही काल में साथ-साथ वर्तमान हों।

"साहित्य में नाटक और रंगमंच एकमात्र ऐसी विधा है, जिसमें कलात्मकता, सृजनात्मकता, और साहित्यिक श्रेष्ठता सभी का सम्मिलित रुप होता है।"[३]

डॉ. सुरेश शुक्ल 'चन्द्र' का जन्म ८ फरवरी, १९३६ ई को उन्नाव जिले के राजपूर गढेवा नामक ग्राम में हुआ। पिता का नाम यज्ञदत्त और माता का नाम जगसेना देवी था। 'चन्द्र' ढाई वर्ष के थे तभी इनके पिता और फिर माता का देहावसान हुआ था। १९३६ में जन्में "शुक्लजी को रौबदार आवाज ही उनकी पहचान थी। किरदार में डूब जाना उनकी कला थी और हर अभिनय को बखूबी निभाना उन्हें खूब आता था।"[४] डॉ. चन्द्र ने २१ नाटक, ५ एकांकी संग्रह, २ काव्यसंग्रह, ४ शोध एवं समीक्षा ग्रंथ, ३ बालनाटय संग्रह, एक उपन्यास और एक आत्मकथा की रचना की थी। वह विलासपुर कॉलेज में हिंदी के प्राध्यापक थे, सेवानिवृत्ति के बाद मध्यप्रदेश में उनकी कर्मभुमि रही। हिंदी के प्राध्यापक पद से सेवानिवृत्ति के बाद वह भोपाल आ गए थे और वही पर १६ दिसंबर २०२१ को उनका देहावसान हुआ।

सुरेश शुक्ल 'चन्द्र' ने समकालीन जीवन की समस्याओं और संदर्भो, चरित्रों और प्रसंगो पर आधारित अपने नाटकों में आधुनिक भाव-बोध और युगचेतना को पिरोया है। साथ ही उसे मानवजीवन के आंतरिक सत्य तथा पारिवेशिक यथार्थ से जोडकर ज्यादा सार्थक, प्रासंगिक, और यथार्थवादी बनाया है। उनमे नाटय-संस्कार और रंगदृष्टि उनके रंगानुभव और जीवनानुभव के परिचायक है। 'चन्द्र' ने गहरे नाटयानुभव का परिचय दिया है। रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' ने लिखा है की, "हिंदी नाटक आज कहाँ-से-कहाँ आ पहुँचा है। यह नाटककारों की जिस पीढी द्वारा रेखांकित होता है, उसमें डॉ. सुरेश शुक्ल 'चन्द्र' की एक अलग पहचान है।"[५]

'चन्द्र' बहुविध नाटककार हैं। उन्होंने अपने नाटकों के कथ्य परिवार, समाज, इतिहास और पुराणों से चुने हैं। इसके नाटकों में आधुनिकता-बोध का स्वर प्रमुख है। इसके साथ ही डॉ. चन्द्र के नाटक भारतीय संस्कृति के उदात्त तत्त्वों से पूरी तरह जूडे हुए हैं। चंद्र के सभी मंचीय नाटक है और उनकी प्रतिकात्मकता बहुआयामी हैं। नाटकों की भाषा भी सरल और रंगमंच का मुहावरा लिए हुए है। संवाद छोटे और प्रभावपूर्ण है। इनके नाटक 'भूमि की ओर, भावना के पीछे, शादी का चक्कर बदलता रुप, प्रेरणा, समवेत, आकाश झुक गया, कुत्ते, भस्मासुर अभी जिंदा है, अक्षयवट आदि है। समकालीन हिंदी नाटककारों ने अपने नाटकों में युगीन परिस्थितियों से प्रभावित होनेवाले व्यक्तिगत जीवन और सामाजिकता को चित्रित किया है।

'चन्द्र' जी के नाटकों का मुल्यांकन रंगमंच से अलग नहीं किया जा सकता और नही ऐसा संभव ही है। समसामायिक प्रश्नों से टकराना और आधुनिक भावबोध को उछालना तद्नुरुप परिवेश एवं परिस्थिति सृजन कर उन्हें दृश्याभिव्यक्ति देना तथा दर्शकों की जीवन-यथार्थ बोध से परिचित कराना इनके नाटय लेखन की विशेषता रही है। वस्तु के आधार पर उनके नाटक अपनी प्रासंगिकता, यथाथर्या और नवीनता भी साबित करते है।

नाटयप्रयोग और रंग-संभावनाओं की दृष्टि से चन्द्र ने रंग-युक्तियों का सहारा लेते हुए कथावस्तु में द्वंद्व एवं तनाव को समसामायिक समस्याओं को, ऐतिहासिक प्रसंगो को, घटनाओं, स्थितियों तथा चरित्रों के माध्यम से दृश्य-रुप में संप्रेषित किया

है। पारंपारिक प्रभाओं और आदर्श तथा यथार्थ से जुडे उनके नाटकों-भूमि की और प्रेरणा में रंगमंचीयता की सारी संभावनाएँ अंतर्निहीत है। नगर और गाँव की समस्याओं की यथार्थ प्रस्तुति करनेवाला नाटक 'भूमि की ओर' यह साबित करता है कि आकाशीय वृत्ति और भाग्यवाद से परे हटकर अपनी भूमि की ओर बढना है। शिक्षित वर्ग का ग्रामोक्षर के लिए नाटककार द्वार आव्हान प्रेरणादायक है। 'भावना के पिछे' की नाटयवस्तु में रेखा द्वारा नारी स्वातंत्र्य का अतिक्रमण और उसके पति अखिलेश का अस्वाभाविक तथा अप्रत्याशित दैन्यभाव उमेश का रेखा के रुप सौंदर्य का प्रेमी होना, रेखा द्वारा छलपूर्वक अपने पति का त्याग और अंत में उमेश द्वारा किसी अन्य लड़की से विवाह कर लेने पर रेखा आत्महत्या कर लेने की घटनाएँ संयोजित है। इसी के साथ शादी के चक्करे नाटक में वर्तमान वैवाहिक विज्ञापनों की सच्चाई से अवगत कराना ऐसे कई सारे विभिन्न विषयोंपर डॉ.सुरेश शुक्ल 'चन्द्र' ने प्रकाश डालने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है।

अत: हम यह कह सकते है की, डॉ.सुरेश शुक्ल 'चन्द्र' एक ऐसे समकालीन और प्रयोगशील नाटककार है, जिन्होंने वर्तमान स्थिति में वैवाहिक समस्या, ग्रामोध्दार का आव्हान, प्रेम में आत्महत्या जैसी समस्या, ऐतिहासिक प्रसंग, घटनाओं का अपने नाटकों में चित्रित करने का प्रयास किया है। साथ ही समकालीन हिंदी नाटककार भारतेंदू, जयशंकर प्रसाद, सुरेंद्र वर्मा, मोहन राकेश, नरेंद्र मोहन, इन्होंने अपने नाटकों में युगीन परिस्थितियों से प्रभावित होनेवाले व्यक्तिगत जीवन और सामाजिकता को अपने नाटकों में चित्रित किया है। समकालीन के लिए अनिवार्य जो तत्व है, स्वचेतना और संवेदनशीलता आदि चन्द्र के नाटकों में उभरकर आए है।

संदर्भ :-

१. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी एकांकी : सामाजिक संदर्भो को पडताल धीरेंद्र शुक्ल – पृ.२६

२. New Standard I llostrated Dictionary and Encyolopedia – पृ.१७७

३. नालंदा अद्यतन शब्दकोश पृ.९३०

४. संकल्प सवेरा – झाबुआ (म.प्रदेश) १६ दिसंबर २०२१

५. नाटककार डॉ.चन्द्र – सिंह के.एन – पृ.११७